प्लूटो का चौथा चंद्रमा खोजा गया

ब्रह्माण्ड को विडंबनाओं से प्रेम है। पांच साल पहले प्लूटो से ग्रह का रुतबा छिन गया था। अब हाल ही में खगोलविदों ने प्लूटो का एक और चंद्रमा खोजा है, जिसके चलते अब इसके आसपास चार चंद्रमा हो गए हैं। प्लूटो के इस नन्हे चंद्रमा का जन्म छोटे कणों की उसी टक्कर से हुआ होगा जिसने अन्य चंद्रमाओं को जन्म दिया था।

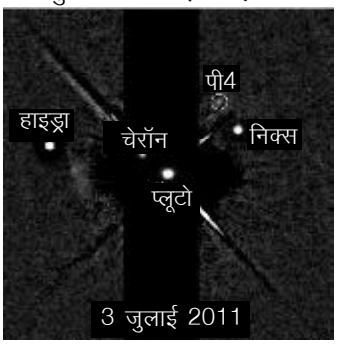

इस नए चंद्रमा की खोज हबल दूरबीन ने की है। फिलहाल इस चंद्रमा का नाम P4 रखा गया है। खगोलविदों के अनुसार इसका व्यास 13 से 34 किलोमीटर के बीच है। इस खोज दल के मुखिया, सेटी इंस्टीट्यूट, कैलिफोर्निया के मार्क सॉल्टर का कहना है कि यह अचरज की बात है कि हबल कैमरा 5 अरब किलोमीटर से अधिक की दूरी पर स्थित इतने छोटे पिंड को देख पाया।

प्लूटो के अन्य तीन चंद्रमा पहले से ज्ञात हैं। 1978 में खोजा गया चैरॉन इनमें सबसे बड़ा है। इसका व्यास 1000 किलोमीटर के आसपास है। निक्स और हाइड्रा को हबल चित्रों में 2005 में खोजा गया था। ये चैरॉन से बहुत छोटे हैं और इनके व्यास क्रमशः 32 और 113 किलोमीटर हैं।

माना यह जा रहा है कि ये चारों चंद्रमा एक साथ एक ही समय पर निर्मित हुए होंगे। खोज दल के सदस्य, मैरीलैण्ड स्थित जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय के एप्लाइड फिज़िक्स लेबोरेटरी के हॉल वीवर का कहना है, "प्लूटो के इस नए चंद्रमा की खोज से इस बात की पुष्टि होती है कि प्लूटो का निर्माण भारी टक्करों के साथ 4.6 अरब वर्ष पहले हुआ होगा।"

सॉल्टर का कहना है कि 'एक बड़ी टक्कर में चैरॉन का निर्माण हुआ और शेष तीन बिखरे हुए मलबे से बने होंगे।'

प्लूटो 2015 मिशन टीम के एक सदस्य एलन स्टर्न कोलेरेडो स्थित साउथवेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट में हैं। वे इस खोज से बहुत खुश हैं लेकिन इसका मतलब है कि प्लूटो के आसपास नज़र रखनी होगी। वहां उपस्थित अनेक पिंड *न्यू हॉराइज़न* अंतरिक्ष यान के लिए खतरा बन सकते हैं। उनको आशंका है कि हमारा अंतरिक्ष यान कहीं उस मलबे में न फंस जाए जो प्लूटो के छोटे चंद्रमाओं निर्माण के दौरान हुई भारी टक्करों से पैदा हुआ है। ***(स्रोत फीचर्स)***